आचार्य शांतिसागर जन्म शताब्दि महोत्सव स्मृति ग्रन्थ(फोल्डर नं. ९२०२२)

मुख्य टाइटल

संपादकीय निवेदन

अनुक्रमणिका

प्रथम भाग – अहवाल, चरित्र, स्मृति आदि ---------- १-१७६

जिनवाणी जीर्णोद्धारक संस्था का पच्चीस साल का अहवाल ---------- १

आचार्यश्री का जीवन परिचय ----------२१

श्रद्धा के सुमन ---------- ४९-८४

विचारवंतों के दृष्टि में ---------- ५१

श्रद्धाञ्जलि ---------- ५९

काव्य ---------- ७७

स्मृति मंजूषा ---------- ८५-१७६

इंग्रजी ---------- ८७

हिंदी ---------- ९३

मराठी ----------१२१

दूसरा भाग – दिगम्बर जैन साहित्य परिचय और परिशीलन ---------- १-३६८

शास्त्र का अर्थ करने की पद्धति औऱ चार अनुयोग – पं. टोडरमलजी ----------२

पंचास्तिकाय समयसार – पं. जगन्मोहनलालजी शास्त्री ---------- १४

श्रीसमयसार – पं. धन्यकुमार मोरे ---------- २२

तत्त्वार्थसूत्र और उसकी टीकाएं – पं. फुलचन्द्रजी शास्त्री ---------- ३७

प्रवचनसार – पं. धन्यकुमार मोरे ---------- ५७

मूलाचार का अनुशीलन - पं. कैलाशचन्द्रजी शास्त्री ---------- ७१

समंतभद्र-भारती – पं. परमानन्द जैन शास्त्री ---------- ८६

श्रीधवलसिद्धान्त ग्रंथराज – श्री रतनलालजी मुख्त्यार ---------- १००

कसायपाहुड-सुत्त अर्थात् जयधवल सिद्धांत – पं. हिरालालजी सिद्धान्तशास्त्री ----------११३

महाबन्ध – पं. फुलचन्दजी शास्त्री ---------- १२६

श्रीमान् पं. टोडरमलजी और गोम्मटसार – पं. नरेन्द्रकुमार भिसीकर ---------- १५४

अष्टसहस्री – डॉ. दरबारीलालजी कोठिया ---------- १६६

परमात्मप्रकाश – श्री प्रकाशचन्द्र हितैषी ---------- १७५

दिगम्बर जैन पुराणसाहित्य – पं. पन्नालालजी ---------- १८२

चन्द्रप्रभचरितम् – पं. अमृतलाल शास्त्री ---------- १९४

ज्ञानार्णव – प्रा. पद्मा किल्लेदार ---------- २०४

तत्त्वार्थसार – पं. बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री---------- २१५

श्रीजिननामावलि-शक्तिमणिकोश – डॉ. पद्मनाभ जैनी ---------- २२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन ज्योतिषसाहित्य – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री ---------- २२८
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय – पं. ब्र. माणिकचन्द्र चबरे ---------- २४५
पं. आशाधरजी और उनका सागारधर्मामृत – श्रीआर्यिका सुपार्श्वमतिजी ---------- २५६
स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षा – पं. जिनदासजी शास्त्री ---------- २७०
आचार्य नेमिचंद्र व बृहद्द्रव्यसंग्रह – पं. नरेन्द्रकुमार भिसीकर ---------- २८२
आर्हत्-धर्म एवं श्रमण संस्कृति – मुनि विद्यानन्द ---------- २९५
Dhananjaya and his Dwi Sandhana – Dr. A. N. Upadhye---------- 303
Ganitsara Sangrah – Prof. D. B. Bagi ---------- 311
महाराष्ट्र के जैन शिलालेख – डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर ---------- ३१५
जैन कानून – श्री वालचन्द पदमसी कोठारि ---------- ३१८
कर्नाटक जैन साहित्याची प्राचीन परंपरा – पं. वर्धमान पा. शास्त्री ---------- ३२३
तत्त्वसार – श्री क्षु. दयासागरजी ---------- ३३०
रत्नकरण्ड श्रावकाचा – श्री ब्र. विद्युल्लताबेन शहा ---------- ३३७
समाधिशतक – पद्मश्री पं. सुमतिबाई शहा ---------- ३४४
आयुर्वेद जगत में जैनाचार्यों का कार्य पं. वर्धमान शास्त्री ---------- ३४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org